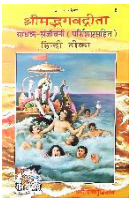

रामसुखदासजी की साधक-संजीवनी तथा साधन-सुधा-सिन्धु प्रसादी ग्रन्थ ने शरणानन्दजी की करण-निरपेक्ष शैली की सर्वोपरिता सिद्ध कर दी है।

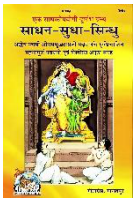

[गीताप्रेस से 1985 से अब तक अंदाजीत 20 लाख से ज्यादा 1200+ पन्ने की अनेकों भाषा में छपी साधक-संजीवनी में से करण-सापेक्ष तथा करण-निरपेक्ष शैली के चुने हुए कुछ अंश]

(दोनों शैली की चौकानेवाली विस्तृत व्याख्या 'साधन-सुधा-सिन्धु' ग्रन्थ में भी उपलब्ध है।)

कर्मयोग में 'कर्म' करण-सापेक्ष है और 'योग' करण-निरपेक्ष है।
- साधक-संजीवनी, नम्र निवेदन, पृष्ठ 'ङ'

परमात्मतत्व की प्राप्ति करण-सापेक्ष शैली से चलने पर देरी से होती है और करण-निरपेक्ष शैली से चलने पर शीघ्रता से तत्काल होती है। करण-सापेक्ष शैली में जड़ता (शरीर-इन्द्रियाँ-मन-बुद्धि) का आश्रय लेना पड़ता है। करण-सापेक्ष शैली से जिन सिद्धियों की प्राप्ति होती है, वे तो परमात्मतत्व की प्राप्ति में विघ्न हैं.. अनिष्ट (पतन) होने की सम्भावना है। गीता में करण-सापेक्ष शैली का भी वर्णन है.. "साधक-संजीवनी" में करण-निरपेक्ष शैली को ही मुख्यता दी गयी है। गीतोक्त कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग - तीनों ही साधन करण-निरपेक्ष अर्थात स्वयं से होने वाले हैं।
- साधक-संजीवनी, प्राक्कथन, साधन की दो शैलियाँ, पृष्ठ 'द' से 'प'

स्वयं के ज्ञान में त्रिपुटी नहीं होती है। स्वयं का ज्ञान तो स्वयं के द्वारा ही होता है अर्थात वह ज्ञान करण-निरपेक्ष है। श्रवण, मनन आदि साधन तत्व के ज्ञान में परम्परागत साधन माने जा सकते हैं, पर वास्तविक बोध करण-निरपेक्ष(अपने- आपसे) ही होता है।
- साधक-संजीवनी, अध्याय 2, श्लोक 29, पृष्ठ 106-107

द्रव्यमय यज्ञ में क्रिया तथा पदार्थ की मुख्यता है; अतः वह करण-सापेक्ष है। ज्ञानयज्ञ में विवेक-विचार की मुख्यता है; अतः वह करण-निरपेक्ष है। इसलिये द्रव्यमय यज्ञ से ज्ञानयज्ञ श्रेष्ठ है।
- साधक-संजीवनी, अध्याय 4, श्लोक 33, पृष्ठ 338

वास्तविक बोध करण-निरपेक्ष है अर्थात मन, वाणी आदि से परे है। उसका वर्णन भी कोई कर नहीं सकता। वास्तविक बोध स्वयं के द्वारा ही स्वयं को होता है। - 4 / 35 / 340

परमात्मतत्व का ज्ञान करण-निरपेक्ष है। इसलिये उसका अनुभव अपने-आपसे ही हो सकता है, इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि आदि करणों से नहीं। मन बुद्धि आदि सब जड़ हैं। .. वास्तव में तत्व का अनुभव जड़ के सम्बन्ध विच्छेद से होता है। - 4 / 38 / 345

स्वरूप का ज्ञान स्वयं के द्वारा ही स्वयं को होता है। इसमें ज्ञाता और ज्ञेय का भाव नहीं रहता। यह ज्ञान करण-निरपेक्ष होता है अर्थात इसमें शरीर, इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि आदि किसी करण की अपेक्षा नहीं होती। - 5 / 20 / 394

कर्मयोग, ज्ञानयोग, और भक्तियोग तो करण-निरपेक्ष साधन हैं, पर ध्यानयोग करण-सापेक्ष साधन है। - 6 / 10 / 432

ध्यानयोग तो करण-सापेक्ष है, पर कर्मयोग करण-निरपेक्ष साधन है। करण-सापेक्ष साधन में जड़ता से सम्बन्ध विच्छेद देरी से होता है और इसमें योगभ्रष्ट होनेकी सम्भावना रहती है। - 6 / 20 / 445

करण-सापेक्ष साधन में मन को साथ लेकर स्वरूप में स्थिति होती है। ..करण को अपना मानने से ही करण-सापेक्ष साधन होता है। ध्यानयोगी मन (करण) को अपना मानकर उसको परमात्मा में लगाता है। मन लगाने से ही वह योगभ्रष्ट होता है। अतः योगभ्रष्ट होने में करण-सापेक्षता कारण है। - 6 / 37 / 472

भक्त भगवत्कृपा से कर्मयोग और ज्ञानयोग-दोनों को ही जान लेता है। ..वे ब्रह्म को भी जान लेते हैं और समग्ररूप को भी जान लेते हैं। .. ऐसे युक्तचेता भक्त अन्तकाल में कुछ भी चिन्तन होने पर भी योगभ्रष्ट नहीं होते, प्रत्युत भगवान को ही प्राप्त होते हैं। करण-सापेक्ष साधन में मनुष्य योगभ्रष्ट होता है। - 7 / 30 / 575

अपने आपको अपने स्वरूप का जो ज्ञान जीव को होता है, वह सर्वथा करण-निरपेक्ष होता है, करण-सापेक्ष नहीं। इसलिए इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि आदिसे अपने स्वरूप को नहीं जान सकते। आप स्वयं ही अपने-आप से अपने-आप को जानते है। - 10 / 15 / 715

इन्द्रियाँ केवल अपने-अपने विषयों को ही पकड़ सकती हैं, परमात्मतत्व को नहीं पकड़ सकतीं; क्योंकि परमात्मतत्व इन्द्रियों (करण-सापेक्ष) का विषय नहीं है। परमात्मतत्व स्वयं का विषय है। स्वयं को स्वयं से ही जान सकते हैं, उसका ज्ञान स्वयं (करण निरपेक्ष) से ही होता है। - 10 / 19 / 719

परमात्मा को स्वयं- (करण-निरपेक्ष ज्ञान-) से ही जाना जा सकता है; प्रकृत्ति के कार्य मन-बुद्धि आदि (करण-सापेक्ष ज्ञान) से नहीं। - 12 / 3, 4 / 810

अभ्यास, शास्त्रज्ञान और ध्यान-ये तीनों तो करण-सापेक्ष हैं, पर कर्मफल त्याग करण-निरपेक्ष है। - 12 / 12 / 836

परमात्मतत्व में सत-असत शब्दों की अर्थात वाणी की प्रवृत्ति होती ही नहीं-ऐसा वह करण-निरपेक्ष तत्व है। ..वह प्रकृत्ति की पकड़ में नहीं आता। परन्तु वह स्वयं से प्राप्त किया जा सकता है। ..तत्व निरपेक्ष और प्रकृति से अतीत है। - 13 / 12 / 882-883

ध्यानयोगी, सांख्ययोगी, कर्मयोगी "अपने-आपसे अपने-आपमें परमात्मतत्व अनुभव कर लेता है।" अपने में परमात्मा को देखना करण-निरपेक्ष होता है। करण-सापेक्ष ज्ञान प्रकृति के सम्बन्ध से होता है। इसलिये साधक किसी करण के द्वारा परमात्मा में स्थित नहीं होता, प्रत्युत स्वयं ही स्थित होता है। स्वयं की परमात्मा में स्थिति किसी करण के द्वारा हो ही नहीं सकती। - 13 / 24 / 899-900

त्रिपुटी से होने वाले (करण-सापेक्ष) ज्ञान में सजातीयता का होना आवश्यक है। अतः 'नहीं' के द्वारा 'नहीं' को ही देखा जा सकता है, 'है' को नहीं। 'है' का ज्ञान त्रिपुटी से रहित (करण-निरपेक्ष) है। ..जो 'है' से प्रकाशित होता है, वह ('नहीं') 'है' को कैसे प्रकाशित कर सकता है? अपने-आपमें स्थित तत्व- ('है'-) का अनुभव अपने-आप- ('है'-) से ही हो सकता है, इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि आदि- ('नहीं'-) से बिल्कुल नहीं। ..यह परमात्मतत्व न तो प्रवचन से, न बुद्धि से और न बहुत सुनने से प्राप्त हो सकता है। - 15 / 11 / 988

तात्पर्य यह है कि इन्द्रिय और बुद्धि जन्य ज्ञान करण-सापेक्ष और अल्प होता है। अल्प ज्ञान ही 'अज्ञान' कहलाता है। इसके विपरीत 'स्वयं' का ज्ञान किसी करण- (इन्द्रिय, बुद्धि आदि-) की अपेक्षा नहीं रखता और वह सदा पूर्ण होता है। - 15 / 15 / 996

"अनुभव के लिए शरीर, इन्द्रिय, प्राण, मन, बुद्धि आदि के सहयोग की अपेक्षा नहीं है। प्रतीति करण-सापेक्ष है, पर अनुभव करण-निरपेक्ष है।"
– शरणानन्दजी, मूक सत्संग (1963), पृष्ठ 182

साधन-सुधा-सिन्धु पृष्ठ 93, 75, 105, 106, 119, 137 के कुछ अंश

परमात्मतत्व की प्राप्ति क्रिया साध्य नहीं है। कोई भी कारक- कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान और अधिकरण परमात्मतत्व तक नहीं पहुँच सकता क्योंकि परमात्मतत्व कारकनिरपेक्ष है। न अंत:करण हमारे लिए है न बहि:करण हमारे लिए है। परमात्मतत्व को विधि रूप से कभी प्राप्त नहीं कर सकते कारण कि परमात्मतत्व नित्य प्राप्त है। विधि की अपेक्षा निषेध श्रेष्ठ और बलवान है। परंतु जिनके भीतर उत्पत्ति विनाशशील वस्तुओं का महत्व है, उनको निषेध मुख्य नहीं दिखता, प्रत्युत विधि मुख्य दिखती है। 'करना' सीमित और 'न करना' असीम होता है। करणसापेक्ष साधन करनेवाले को अंत में करणनिरपेक्ष होने पर ही तत्व का अनुभव होता है; क्योंकि तत्व करणरहित है। जैसे कोई राजा रथ पर बैठकर रनिवास तक जाता है तो वह रथ को बाहर ही छोड़ देता है और अकेले रनिवास के भीतर जाता है, ऐसे ही करणसापेक्ष साधन करने वाला भी अंत में कर्म से संबंध विच्छेद करके अकेले स्वयं ही परमात्मतत्व में प्रवेश करता है।

करणरहित साध्य की प्राप्ति के लिए गीताप्रेस की 'साधन और साध्य' नामक छोटी-सी पुस्तक पढ़े।

रामसुखदासजी का यह विडियो देखना ही होगा। Scan QR Code

For 100% Pure KARAN-NIRPEKSH Books refer swamisharnanandji.org

उपरोक्त पत्रक किसी की भावना को ठेस पहुँचाना नहीं है, बल्कि गुरु निष्ठा है। KMSS

दुलीचंदजी 79888 86115 करनाल मानव सेवा संघ प्रेममूर्तिजी 94164 67999

श्री स्वामी शरणानन्दजी

एक अद्वितीय सन्त

-स्वामी रामसुखदासजी

श्री स्वामी शरणानन्द जी महाराज सर्वोच्च कोटि के महात्मा थे। उनके समान कोई दार्शनिक नहीं हुआ। उनकी वाणी विलक्षण है। मैंने अनेक सन्तों की वाणी पढ़ी है, पर शरणानन्दजी की वाणी सबसे विलक्षण है। उनके शब्द बड़े चुने हुए हैं और विशेष अर्थ रखते हैं। उनका विवेचन आदि शंकराचार्यजी से भी तेज है। उनकी साधना विवेक प्रधान होने से उनकी वाणी में विवेक की प्रधानता है। मैं भी उसी का अनुसरण करता हूँ। मैं सत्य का अनुयायी हूँ, व्यक्ति या सम्प्रदाय का नहीं।

शरणानन्दजी की बुद्धि विलक्षण थी। वे कहते थे कि भगवान ने मुझे आवश्यकता से अधिक बुद्धि दे रखी है। उनकी बुद्धि भी तेज थी और पकड़ भी तेज थी। उनमें पचाने की शक्ति भी थी, जैसे वैश्यों में धन पचाने की शक्ति होती है। इसलिए इतना ऊँचा बोध होने पर भी वे प्रकट नहीं करते थे। कारण कि उनकी दृष्टि में सब कुछ वासुदेव ही था। वे किसी बात को व्यक्तिगत नहीं मानते थे।

शरणानन्दजी की वाणी में युक्तियों की, तर्क की प्रधानता है। उनको कोई काट नहीं सकता। मुझे भी तर्क पसन्द है। परन्तु मैं शास्त्रविधि को साथ रखते हुए तर्क करता हूँ। उनकी पुस्तकों में यह बात देखने में आती है कि वे बोध कराना चाहते थे, सिखाना नहीं चाहते थे। उनकी बातें गोली की तरह असर करती है। वे अपनी बात को परोक्ष रूप से कहते थे, जिससे साधक कोरी बातें सीख न जाए। वे 'अभ्यास' न कराकर 'स्वीकार' कराते थे, 'बौद्धिक व्यायाम' न कराकर 'अनुभव' कराते थे।

शरणानन्दजी की भाषा कठिन होने में दो कारण प्रतीत होते है- पहला, पढ़ाने की कला से अनभिज्ञता और दूसरा, गूढ़ भाषा में लिखने से पाठक उसमें अधिक विचार करे, जिससे बात उसकी बुद्धि में बैठ जाए। उन्होंने सोच समझकर ऐसी भाषा का प्रयोग किया है, जिससे पढ़ने वाले को बुद्धि लगानी पड़े। सरल भाषा का प्रयोग करने से पढ़ने वाला बातें सीख जाता है, बुद्धि नहीं लगाता। उनकी बातें बड़ी मार्मिक है। वैसी और जगह नहीं मिलती। मैं सत्त्य का अनुयायी हूँ, व्यक्ति या सम्प्रदाय का नहीं।

शंकराचार्य, रामानुजाचार्य आदि जितने आचार्य हुए हैं, उन सबसे तथा छहों दर्शनों से शराणानन्दजी का दर्शन तेज है। उनकी बातें, सम्पूर्ण शास्त्रों का अन्तिम तात्पर्य है। अबतक वेदान्त का जितना विवेचन हो चुका है, उससे आगे शरणानन्द जी की वाणी है। शरणानन्द जी कहते थे कि एक नये लोक का निर्माण हो रहा है। क्योंकि अहम् का इतना अभाव पहले किसी दार्शनिक का नहीं हुआ। उन्होंने क्रिया और पदार्थ के आश्रय का सर्वथा त्याग कर दिया था, जो आजतक किसी सन्त ने नहीं किया। इसलिए वे क्रांतिकारी सन्यासी थे। उनका जो इतना विकास हुआ, वह शरणागति के कारण ही हुआ।

कर्ण के पैर, कुन्ती के पैरों से मिलते थे, इसलिए युधिष्ठिर को कर्ण के पैर स्वाभाविक ही प्रिय लगते थे, पर क्यों लगते हैं- इसका उन्हें पता नहीं था। ऐसे ही आरम्भ से मुझे शरणानन्द जी की बातें प्रिय लगती थी। पर इसका कारण पीछे पता चला कि शरणानन्द जी की बात गीता की बात है और गीता मुझे प्रिय लगती है। शरणानन्द जी की बातें मेरी प्रकृति के अनुकूल पड़ती हैं। वैसी प्रकृति मेरी शुरू से रही है।

शरणानन्द जी में यह बिलक्षणता ईश्वर की शरणागति से ही आयी थी। उन्होंने एक बार कहा था कि मेरा स्वभाव है, जिस बात को पकड़ लेता हूँ, उसे फिर छोड़ता नहीं। उन्होंने शरणागति को पकड़ लिया था। भगवान् के शरणागत होने से उनमें ज्ञान का प्रवाह आ गया। उनकी वाणी में स्वतः गीता का तत्व उतर आया। उनकी बातों से गीता का अर्थ खुलता है। उन्होंने जड़-चेतन का जैसा विश्लेषण किया है, वैसा किसी सन्त की वाणी में नहीं मिलता।

शरणानन्दजी के मतानुसार सुखी-दुःखी होना मुर्खता का फल है, प्रारब्ध का फल नहीं। उनके मतानुसार विवेक अनादि है और बुद्धि में आता है। शरणानन्दजी के मतानुसार 'कर्म' सकाम या निष्काम नहीं होता, प्रत्युत 'कर्ता' सकाम या निष्काम होता है। मुझे उनका मत पूरी तरह मान्य है। कर्मयोग की बात मैंने उनसे ही सीखी है। उनकी पुस्तक 'मानव की मांग' पढ़कर मेरी उन पर श्रद्धा हुई।

शरणानन्दी की बाते बड़ी मार्मिक और गहरी है। गहरा विचार किये बिना हर एक के जल्दी समझ में नहीं आती। वो जो बातें कहते हैं, ये छहों दर्शनों में नहीं मिलती। केवल गीता और भागवत् के दशम् स्कन्ध में मिलती है। पर वे भी पहले नहीं दिखती। जब शरणानन्दजी की बातें पढ़ लेते हैं, तब वे गीता और भागवत् में भी दीखने लगती हैं। वे सीधे मूल को पकड़ते है। सीधे कलेजा पकड़ते है। इतना प्रचण्ड ज्ञान होते हुए भी इस विशेषता को उन्होंने अपना नहीं माना।

श्रीशरणानन्द जी महाराज एक क्रान्तिकारी सन्यासी थे। उन्होंने एक बार मुझसे कहा था कि आप मेरे ही भावों का प्रचार करते हैं। उनका कहना सही है। मेरा मानना है कि शरणानन्दजी के समकक्ष कोई नहीं है। शरणानन्दजी के समान मुझे दूसरा कोई नहीं दिखता। दीखना दुर्लभ है।

पहले मैं समझता था कि शरणानन्दजी ने कभी पढ़ाया नहीं, इसलिए उनकी बात सबकी समझ में जल्दी नहीं आती। पर अब दीखता है कि उनकी दृष्टि में सब कुछ वासुदेव ही है फिर वे किसको अज्ञानी, बेसमझ मानें? वे दूसरे को बेसमझ मानेंगे, तभी तो उसे समझायेंगे। उनकी बातों का सार है-अपनी व्यक्तिगत कोई भी वस्तु नहीं है, और एक सत्ता के सिवाय कुछ भी नहीं हैं।

हम कोई बात कहते हैं तो हमें प्रमाण की आवश्यकता रहती है, पर शरणानन्दजी को प्रमाण की आवश्यकता है ही नहीं। उन्होंने जो लिखा है उससे आगे कुछ नहीं है ऐसी मेरी धारणा है। उनकी बातें सब मनुष्य मान सकते हैं। उनकी युक्तियों का किसी से विरोध नहीं है। उन्होंने कहा कि भगवान् क्या है- इसे खुद भगवान् भी नहीं जानते, ऐसे ही शरणानन्दजी क्या हैं-इसे खुद शरणानन्दजी भी नहीं जानते। शरणानन्दजी हमें मिल गये, उनकी पुस्तकें पढ़ने को मिल गयी यह भगवान की हम पर बड़ी कृपा है। (साभार तरुतले भाग 2)

शरणानन्दजी के प्रति अनेकों संतों के (videos) विचार जानने के लिए youtube a/c Santo Ka Khazana देखें।

For Books & Pravachans refer https://www.swamisharnanandji.org

करनाल मानव सेवा संघ Mo: 9416467999 ; 79888 86115

अद्वितीय शरणानन्दजी के प्रति बड़े सन्तों के मार्मिक विचार

1. गोविन्ददेव गिरिजी महाराज एवं गुरु सत्यमित्रानन्दजी– (19-07-2023 सायं)

शरणानन्दजी की बातें वेदव्यासजी का जूठन नहीं है । जहाँ से उपनिषद आये वहीं से शरणानन्दजी के वाक्य आते हैं। जीवनभर एक भी ग्रन्थ न पढने वाले ये महात्मा, जिनके एक-एक वाक्य पर ग्रन्थ लिखे जा सकते हैं।

2.पथमेड़ा महाराजजी गौ-ऋषि दत्तशरणानन्दजी– (9-8-2023, 27-9-2023)

इतना सरल, स्पष्ट, सूत्रात्मक, साफ '**सत्य**' शरणानन्दजी की वाणी से पूर्व किसी से प्रकट नहीं हुआ। कलियुगी जीवों के लिए आवश्यक यह वाणी है। देश और दुनिया की मानव जाति के उत्थान का अपूर्व सन्देश है। यह अनुपम वाणी सभी दर्शनों का सार भी है, सभी दर्शनों से श्रेष्ठ भी है।

3. स्वामी रामसुखदासजी महाराज –(MSS प्रवचन से तथा 5.5.2000, 16.00 hrs.)

शरणानन्दजी के समान मैं मानता नहीं हूँ किसी संतको। उन्होंने जो लिखा है, उसके आगे कुछ नहीं है। **उनकी बातें सब ग्रंथों का अन्तिम सार है।** उनकी पुस्तकें पढ़ने से बड़े-बड़े दार्शनिक, पंड़ितों में भी हलचल मच जायेगी। ऐसी विचित्र बातें बतायी हैं, जो आदमी के कान खुल जाये, आँख खुल जाये, होश आ जाये। **सत्य के अनुयायी बनें, व्यक्ति या सम्प्रदाय के नहीं।**

4. Dr. Satinder Dhiman (Ph. D., Ed.D. - U.S.A.)

All the darshans /philosophies of the world on one side, and Sharnanandji's darshan on one side. He is certainly the most **"Unique"** and **"Original"** of all thinkers and saints. If his ideas become truly known, it will certainly create a **"Revolution"** in the world !

5. स्वामीनारायण सन्त ज्ञानजीवनदासजी– (सागर कथा-15.3.2013)

स्वामी शरणानन्दजी का साहित्य पढ़ने जैसा है। जैसे बड़े-बड़े भारतीय ऋषि मुनि हो गये, आर्षद्रष्टा हो गये, वैसे वे आज के आर्षद्रष्टा ऋषि हैं। उनकी बातें '**सातवाँ दर्शन**' जैसी अद्भुत हैं।

6. स्वामी अनुभवानन्दजी सरस्वती– (व्यावहारिक गीता-5 से)

शरणानन्दजी का जीवन पढ़ो आप, उन्होंने कोई पढ़ाई नहीं की थी, वे प्रज्ञाचक्षु थे। उनके एक-एक जो अनुभव हैं, उसको आप '**पाँचवा वेद**' कह सकते हैं, इतने श्रेष्ठ अनुभव हैं।

7. स्वामी अखण्डानन्दजी सरस्वती – (मोरारी बापू, मानस सुरधेनु, 20/11/2012)

मिलावट वाला वेदान्त सुनना है तो हमारे पास आओ और शुद्ध, विशुद्ध, दो टूक वेदान्त सुनना है तो स्वामी शरणानन्दजी के पास जाओ।

Videos of all above quotes are available on youtube a/c "Santo Ka Khazana"

For Books & Pravachans refer - www.swamisharnanandji.org P.T.O.

मेरे नाथ !

गाय सारे राष्ट्र और विश्वकी माता है

(ब्रह्मलीन श्रद्धेय स्वामी श्रीशरणानन्दजी महाराज)

— कल्याण (भाग ८४, पृष्ठ ६३८) से

1- हम गाय की सेवा करेंगे तो गाय से हमारी सेवा होगी |

2- शुद्ध संकल्पमें ही संकल्पसिद्धि रहती है | शुद्ध संकल्पका अर्थ क्या है ? जिसकी पूर्तिमें लोगोंका हित हो और प्रभु की प्रसन्नता हो, उसको शुद्ध संकल्प कहते हैं | जब संकल्प शुद्ध होता है तो सिद्ध होता ही है, ऐसा प्रभुका मंगलमय विधान है |

3- सेवक कैसा होना चाहिये, इसपर विचार करनेसे लगता है कि सेवकके हृदयमें एक मधुर-मधुर पीड़ा रहनी चाहिये और उत्साह रहना चाहिये तथा निर्भयता रहनी चाहिये एवं असफलता देखकर कभी भी निराश नहीं होना चाहिये | सेवकसे सेवा होती है, सेवासे कोई सेवक नहीं बना करता |

4- इस देशमें ही नहीं, समस्त विश्वमें मानव और गायका ऐसा सम्बन्ध है कि जैसा मानवशरीरमें प्राणका | अब अन्य देशोंमें गायका सम्बन्ध आत्मीय नहीं रहा, कहीं आर्थिक बना दिया, कहीं कुछ बना दिया | मेरे ख्यालसे गायका सम्बन्ध आत्मीय सम्बन्ध है | गाय मनुष्यमात्रकी माता है |

5- लोग गायका आर्थिक पक्ष सामने रखकर सोचते हैं कि गायकी सेवा तनसे और मनसे होनी चाहिये | आज हमलोगोंकी ऐसी स्थूल द्रष्टि हो गयी है कि धनकी सेवाको बहुत बड़ी सेवा समझते हैं | बहुत बड़ी सेवा तो मनकी सेवा है, जिसे हर भाई-बहन कर सकता है |

6- हमारा मन और गाय यह एक होना चाहिये | हमारे मनमें गाय बस जाय, किसलिये ? इसलिये नहीं कि हमको कोई लाभ होगा, पर इसलिये कि अगर विश्वमें गाय है तो सात्विक प्राण, सात्विक बुद्धि और दिर्घायुवाली बात पूरी हो सकती है |

7- केवल इसी बात को लेकर कि हमारी संस्कृतिमें गाय है, हमारा धर्ममें गाय है, यह सब तो है ही, लेकिन मेरा विश्वास है कि गायका और मनुष्यके प्राणोंका घनिष्ट सम्बन्ध है | गाय मानवीय प्रकृतिसे जितनी मिल-जुल जाती है, उतना और कोई पशु नहीं मिल पायेगा |

8- बच्चेके मरनेका जितना शोक होता है और उसके पैदा होनेपर जितना हर्ष और उत्सव होता है,वैसे ही गायके मरने और पैदा होनेपर शोक और हर्ष होता था,यह हमने बचपनमें देखा था |

9- जिस गायका बच्चा मर जाय, उसका दूध नहीं पीते थे | आज तो बच्चा मारकर ही दूध निकालते हैं |

10- गाय जितनी प्रसन्न होती है, उतने ही उसके दूधमें विटामिन्स उत्पन्न होते हैं और गाय जितनी ही दुःखी होती है, उतना ही दूध कमजोर होता है |

11- मेरी हार्दिक इच्छा है कि कोई घर ऐसा न हो, जिसमें गाय न हो ; गायका दूध न हो | हर घरमें गाय हो और गायका दूध पीनेको मिलना चाहिये | गायने मानवबुद्धिकी रक्षा की है |

12- बेईमानी का समर्थन करना और उससे एक-दूसरेपर अधिकार जमाना, यह बढ़ता जा रहा है | इसका कारण है कि बुद्धि सात्विक नहीं है, बुद्धि सात्विक क्यों नहीं ? कारण मन सात्विक नहीं है | मन सात्विक क्यों नहीं ? कारण शरीर सात्विक नहीं है | शरीर सात्विक नहीं है, तो इसका कारण ? आहार सात्विक नहीं है |

13- मैं आपसे निवेदन करना चाहता था कि सचमुच जितना आपलोग गायके सम्बन्धमें जानते हैं, उसका हजारवाँ हिस्सा भी मैं नहीं जानता हूँ, लेकिन क्या सचमुच आपलोग गायके साथ मातृ-सम्बन्ध जोड़नेके लिये राजी हैं ? अगर हाँ, तो हमारा बेड़ा पार हो जायगा |

14- जो लोग सेवा करना चाहते हैं—वे कैसे हैं, इस बातपर जोर डालिये | समाज क्या करता है, राज्य क्या करता है, लोग कुछ देते हैं कि नहीं, यह गौण है | मुख्य बात यह है कि अपने दिलमें गायके प्रति पीड़ा होती है कि नहीं ?

15- गाय हमारी ही नहीं, मानवसमाजकी माँ है, सारे राष्ट्रकी और सारे विश्वकी माँ है | गायकी रक्षा होती है तभी प्रकृति भी अनुकूल होती है, भूमि भी अनुकूल होती है | गायकी सेवा होनेसे भूमिकी सेवा होती है और भूमि स्वयं रत्न देने लगती है |

16- जैसे-जैसे आप गोसेवा करते जायँगे, वैसे-वैसे आपको यह मालूम होता जायगा कि गाय आपकी सेवा कर रही है | आपको यह लगेगा कि आप गायकी सेवा कर रहे हैं तो गाय हर तरहसे स्वास्थ्यकी दृष्टिसे, बौद्धिक दृष्टिसे, धार्मिक दृष्टिसे आपकी सेवा कर रही है |

17- हम सच्चे सेवक होंगे तो हमारी सेवा होगी, हमारी सेवाका मतलब मानवजातिकी सेवा होगी | मानवमात्रकी सेवासे ही सब कुछ हो सकता है | मानव जब सुधरता है तो सब कुछ सुधरता है और मानव जब बिगड़ता है तो सब कुछ बिगड़ जाता है |

17 सूत्रों के colorful pamphlet के लिए
शरणानन्दजी महाराज

गो-माता विषयक 17 सूत्रों की विडियो के लिए
पथमेड़ा महाराजजी

अद्वितीय शरणानन्दजी के प्रति बड़े सन्तों के मार्मिक विचार
सन्तों का खज़ाना

भगवान भरोसे चल रही ↓ सेवा करने योग्य ↓ दुर्लभ संस्थाएँ

1. गौ-ऋषि दत्तशरणानन्दजी द्वारा संचालित डेढ़ लाख+ देशी गोवंश का आश्रय स्थान

प्रतिदिन 50 लाख से ज्यादा खर्चा

SHRI GODHAM MAHATEERTH PATHMEDA LOK PUNYARTH NYAS
Bank Name :- BOB, Ashram Road Ahmedabad
A/c No :- 08490100023827
IFSC Code :- BARB0ASHRAM (Fifth character is zero)

आपके संग्रह का सदुपयोग होता है तो अपने को भाग्यशाली समझें।

Website:- www.godhampathmeda.org Mo:- 07665059999 (A/C Dept)

2. दीन-दुखी, बीमार, निराश्रित, शोषित, वंचित दरिद्र नारायण (गरीबों) का आश्रय स्थान

APNA GHAR ASHRAM, BHARATPUR **(Dr. Bhardwaj)**
Bank Name :- PNB Bachhamadi
A/c No :- 2619000100034136
IFSC Code :- PUNB0261900

कोई और नहीं, कोई गैर नहीं। कुछ न चाहो, काम आ जाओ।

Website:- www.apnagharashram.org Mo:- 09810212213 (Bansalji)

3. साधु-सन्तों, ब्रह्मचारियों तथा साधकों का निःशुल्क आश्रय स्थान

SHRI RAM SEWA ASHRAM CHARITABLE TRUST
Bank Name :- PNB, Vrindavan
A/c No :- 0463010100013274
IFSC Code :- PUNB0490200 **Mo:- 09045787900 (Ganeshji)**

मेरा कुछ नहीं है, मुझे कुछ नहीं चाहिये।

4. गोप्रेमी राजेन्द्रदासजी द्वारा संचालित देशी गौमाता का आश्रय स्थान

SHREE VRAJ KAMAD SURBHI VAN AVAM SHODH SANSTHAN
Bank Name :- PNB, Vrindavan
A/c No :- 4903000100008504 ,
IFSC Code :- PUNB0490300,

'लीज' पर मिली है ये जिन्दगी, 'रजिस्ट्री' के चक्कर में ना पड़ें।

Website:- www.jadkhor.org Mo:- 08824500377 (whatsapp)

5. स्वामी श्री निर्दोषानंदजी मानवसेवा हॉस्पिटल- 'निःशुल्क इलाज, No Cash Counter'

स्वामी श्री निर्दोषानंदजी मानवसेवा ट्रस्ट
Bank Name :- SBI, Dhola Junction Branch
A/c No :- 56017002255, IFSC Code :- SBIN0060017

'मिला हुआ देने पर और मिलेगा'-नियम है।

Website:- www.nirdoshhealth.org Mo:- 08156099953, 09904226146 (whatsapp)

सबका साथ- सबका विकास ✲ पढ़े-पढ़ाएँ, सुरक्षित रखें, वितरण करें

मार्गदर्शन हेतु- गौप्रेमी गोपेशजी 08218697399 - संतप्रेमी माथुरजी 09997647485

बार-बार कहते रहो :- हे नाथ! हे मेरे नाथ !! मैं आपको भूलूँ नहीं